आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Weekly Aryodaye No. 365 ARYA SABHA MAURITIUS 8th June to 14th June 2017

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

मार्जन-मन्त्राः

Mārjana Mantrāh - The Purificatory Verse

ओं भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः । ओं स्वः पुनातु कण्ठे ।
ओं महः पुनातु हृदये। ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः ।
ओ सत्यं पुनातु पुनः शिरसि । ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

भावार्थ *– प्राणों से भी प्रिय परमात्मा सिर में पवित्रता करे। दुःख-विनाशक परमात्मा आँखों में पवित्रता करे। सदा आनन्दमय और सबको आनन्द देनेवाला परमात्मा कण्ठ में पवित्रता करे। सबसे महान् और सबका पूज्य परमात्मा हृदय में पवित्रता करे। सर्वजगत् उत्पादक परमात्मा नाभि में पवित्रता करे। दुष्टों को सन्ताप देनेवाला परमात्मा पैरों में पवित्रता करे, सत्यस्वरूप अविनाशी परमात्मा पुनः सिर में पवित्रता करे। सर्वव्यापक, सर्वतोमहान् परमात्मा शरीर के सब अङ्गों में पवित्रता करे।*

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा)

Om Bhūh Punātu Shirasi. Om Bhuvah Punātu Netrayoh. Om Swah Punātu Kaṇṭhē.
Om Mahah Punātu Hridaye. Om Janah Punātu Nabhyām. Om Tapah Punātu Pādayoh.
Om Satyam Punātu Punah Shirasi. Om Kham Brahma Punātu Sarvatra.

Meaning :- **Om** - Protector, the Supreme Lord, **Bhūh** - the Giver of life, the Lord who is dearer than vital breath, **Punātu** - to purify, **Shirasi** - in the head, **Bhuvah** - the Remover of sorrow, pain,etc., **Netrayoh** - in the eyes, **Swah** - the Giver of happiness, **Kaṇṭhē** - in the throat, **Mahah** - the great Lord, **Hridaye** - in the heart, **Janah** - the Creator of the world, **Nabhyām** - in the navel, **Pādayoh** - in both legs, **Satyam** - Eternal, Reality, **Punah** - again, **Kham Brahma** - The Supreme God as high as the sky, **Sarvatra** - in all organs.

Purport :- O God, our Protector, You are the Giver of life, the Remover of sorrows and sufferings, the provider of bliss, the Great Lord, the Creator, the Lord of austerity and truth. You are the Supreme Being. Kindly purify my head, eyes, throat, heart, navel, in short, all my organs so that no part of my body leads me to sin.

Explanation :- God, the Supreme Lord, is at the origin of genuine bliss. He is reflected only in a pure mind. When we commit sins through our various organs, we pollute our minds. As a dirty mirror cannot reflect our faces, similarly we cannot realise the existence of the Supreme Being through an impure mind. Only that person can attain the bliss of the Almighty whose organs are pure and virtuous. Hence, the above mantra lays stress on the purity of all our organs. By reciting it, we pray the Supreme Lord to purify our power of understanding and vision, our power of speech, brain, intellect, etc.

Dr O.N. Gangoo

सत्यार्थप्रकाश की रचना

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के.,आर्य रत्न,मंत्री आर्य सभा

यह सर्वविदित है कि महर्षि दयानन्द गुजराती थे। इस लिए उनकी मातृ भाषा गुजराती थी। पर चूँकि उन्हें वेद पढ़ना था, क्योंकि उनके पिता सामवेदी ब्राह्मण थे, मूलशंकर को नागरी लिपि का ज्ञान आरम्भ में ही करवाया गया था।

अब प्रश्न उठता है कि जब उन्होंने पुस्तकें लिखना आरम्भ किया तो हिन्दी खड़ी बोली को क्यों चुना ? वे गुजराती में लिख सकते थे, जैसे बाद में जब करमचन्द गांधी ने अपनी आत्म-कथा लिखी तो अपनी मातृ भाषा गुजराती में लिखी और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'गीतांजलि' अपनी मातृ भाषा बंगला में लिखी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती तो अपने प्रचार-प्रसार कार्य संस्कृत के माध्यम से करते थे, जब तक वे बंगाल की राजधानी-कलकत्ता नहीं गए थे। वे कलकत्ता पहुँचे थे - दिसम्बर १८७२ में और वहाँ क़रीब चार मास रहे थे। उसी दौरान वे कलकत्ता के अनेक मूर्धन्य विद्वानों, विचारकों एवं समाज सेवियों से मिले थे। उनमें तरुण ब्रह्मो समाज के नेता केशवचन्द्रसेन भी थे, जिन्होंने स्वामी जी को हिन्दी बोलने और हिन्दी में पुस्तकें लिखने की सलाह दी थी, क्योंकि स्वामी जी हिन्दी प्रदेशों में प्रचार-कार्य करते थे। स्वामी जी ने केशवचन्द्र को ध्यान से सुना और नोट कर लिया।

जब कोई सलाह देता तो स्वामी जी ध्यान से सुनते थे और ध्यानावस्था में डूबकर विचार पर चिंतन करते और विचार जनता के फ़ायदे के लिए होता तो कार्यान्वित करते।

सचमुच, स्वामी जी ने अपनी विलक्षण बौद्धिक-शक्ति से अति अल्प समय में कामचलाऊ भाषा सीख ली। अब वे हिन्दी में प्रचार-कार्य करने लगे।

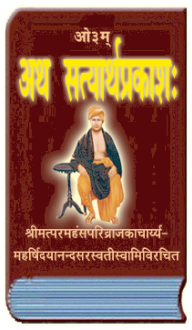

हिन्दी प्रदेशों में विशेषकर उत्तर प्रदेश में उनके चाहने वाले, उनके अनुयायी बहु-संख्या में होने लगे। उन सैकड़ों अनुयायियों में एक थे राजा जयकृष्णदास डिप्टी कोलेक्टर जो एक भारी ओहदे पर थे। उस वक्त वे बनारस में सेवारत थे, जिनके ऊपर शेक्सपियर नामक कोमिस्यनर और सर अहमद खान जज थे। एक दिन जयकृष्णदास ने स्वामी जी से मिलकर कहा – 'स्वामी जी आप जो उपदेश देते हैं। उसे सुनकर उन्हीं लोग लाभान्वित होते हैं जिन्हें सुनने का मौक़ा मिलता है। बहुत से लोगों को सुनने का मौक़ा नहीं मिलता है। स्वामी जी, यदि आप अपने अमूल्य विचारों को लिपिबद्ध करके पुस्तक-आकार में छपवा देंगे तो उन सभी लोगों को भी पढ़ने के बाद लाभ होगा। वैसे आपको भी सर्वत्र जाने का मौक़ा नहीं मिलता है। दूसरी तरफ़ पुस्तक के रूप में छप जाने से उपदेश स्थायी हो जायेंगे और लोग युगयुगान्तर तक पढ़कर लाभान्वित होते रहेंगे।

जयकृष्णदास ने स्वामी जी को आश्वासन दिया कि लिखवाने और छपवाने का भार भी मैं अपने ऊपर ले लूँगा। महाराज ने राजा साहब के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

शेष भाग पृष्ठ २ पर

॥ ओ३म् ॥
सत्यार्थप्रकाशः
Satyarth Prakash

सम्पादकीय

चेतावनी

स्वास्थ्य-रक्षा करना मानव-कर्त्तव्य है। स्वस्थ बलिष्ठ और नियंत्रित व्यक्ति सदा आनन्दमय जीवन व्यतीत करने का भाग्य प्राप्त करता है। वह अपने अनुभव, योग्यता और पुरुषार्थ से वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में पूरा सहयोग देने का सामर्थ्य रखता है। स्वास्थ्य बिगड़ा तो समझो सुख, चैन और आनंद ज़िन्दगी से दूर भाग गए।

रोगों से पीड़ित आदमी अपनी शारीरिक सेवा में हज़ारों रुपये खर्च कर देते हैं। रोगग्रस्त होने पर वे अपने परिवार के लिए भार स्वरूप बन जाते हैं। उनकी देख-रेख में घर के सदस्य भी व्यस्त रहते हैं, इसीलिए नित्य, योगाभ्यास, प्राणायाम, व्यायाम करने की आदत डालनी चाहिए और शुद्ध पौष्टिक तथा संतुलित भोजन खाना चाहिए। चटपटे, चरबीदार, नशीले और विनाशकारी खाद्य पदार्थों का सेवन भूलकर भी नहीं करना चाहिए, जिनसे शारीरिक क्षति पहुँच सके।

आज यह देखा जा रहा है कि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करके इन्सान अपनी जवानी में ही बीमार हो रहे हैं। लोग Fast Food, Drugs तथा कई नशीली वस्तुएँ ग्रहण करके जीवन नष्ट कर रहे हैं। कितने जवान मादक-द्रव्यों का शिकार हो रहे हैं। इन प्राण-घातक वस्तुओं से अपने शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक संतुलन खो बैठे हैं। वे गाँजे, अफ़ीम, चरस, आदि मादक-द्रव्यों के दुष्प्रभाव से पीड़ित हैं, जिन कारणों से घर के सारे परिवार चिंतित हैं। उनके अभद्र व्यवहारों से जनता दुखित है। इन दुर्व्यसनों से अपने परिवार के हर एक सदस्य को दूर रखना तथा उन्हें चेतावनी देना प्रत्येक गृह-स्वामी, शिक्षक तथा समाज-संस्थापक, समाज-सेवकों आदि का उत्तरदायित्व बनता है।

बड़ी सावधानी से अपने बच्चों और युवा-युवतियों के आचार-विचार व्यवहार, संगत, खान-पान पर ध्यान देने की आवश्यकता है। आज के इस तनावपूर्ण जीवन में हम भौतिकवादी बनकर इतना व्यस्त हैं कि हमें अपनी संतानों के रहन-सहन तथा संगति करण पर ख्याल ही नहीं है और हमारे अधिकतर जवान कुसंग की ओर फँसते जा रहे हैं, उनकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि कई परिवारों में माता-पिता, बच्चे, जवान और वृद्ध किसी उत्सव में साथ मिलकर अभक्ष्य आहार और नशीले पदार्थ सेवन कर रहे हैं। इसी प्रकार शराब पीने की लत लग जाने से आज की नई पीढ़ी मादक-द्रव्य के आदी होकर विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमारी असावधानी के कारण कई परिवार अति दुखित हैं। मादक-द्रव्य हमारे देश में नशेखोरों के अड्डों से निकलकर कॉलेजों तथा प्राथमिक स्कूलों तक पहुँच चुका है, जो हमारे लिए एक चुनौती है। ऐसी गम्भीर परिस्थिति में हमें मादक-द्रव्यों के विरोध में भारी अभियान चलाने की ज़रूरत है, अन्यथा हमारे बहुत से जवानों का भविष्य अंधकार में होगा। इस अभियान में अगर हम चुक गए तो ड्रग्स के दुष्प्रभाव से कितने परिवार पीड़ित हो जाएँगे और नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले नशेखोरों का जीवन खोखला हो जाएगा।

प्रिय पाठको! यह एक भारी चेतावनी है कि हम शीघ्रातिशीघ्र अपने परिवार के सदस्यों को सचेत करके इन प्राणघातक वस्तुओं से दूर रखें, अन्यथा ये नशीली वस्तुएँ धीरे-धीरे दीमक की तरह हमारे नशेखोर युवक-युवतियों का सर्वनाश कर देंगी। यह सदा ध्यान रहे कि नशेबाज़ी अपने धन, स्वास्थ्य और चरित्र तीनों बरबाद करके अपना अनमोल जीवन नष्ट कर देते हैं और अपने परिवारों के सुख-चैन तथा शान्ति लूट लेते हैं। अतः सावधान होकर परिवार के प्रत्येक सदस्य/सदस्या को सुरक्षित करना हमारा कर्तव्य है।

बालचन्द तानाकूर

पृष्ठ १ का शेष भाग

राजा साहब ने पुस्तक लिखाने के लिए एक महाराष्ट्रीय पं० चन्द्रशेखर को नियत कर लिया और १२ जून १८७४ से 'सत्यार्थप्रकाश' 'सत्य के अर्थ का प्रकाश' की रचना आरम्भ हो गई। स्वामी जी महाराज बोलते जाते थे और पं० चन्द्रशेखर लिखते जाते थे। अन्त में बहुत अल्प समय में पुस्तक तैयार हुई और उसका पहला संस्करण राजा जयकृष्णदास की सहायता से काशी निवासी मुन्शी हरवंशलाल के लाइट प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ।

यह पुस्तक अनेक अमूल्य उपदेशों से युक्त थी। इसके कई स्थल तो बड़े ही महत्त्व के थे, जिनसे ज्ञात होता था कि स्वामी जी वास्तव में 'ऋषि' अर्थात् द्रष्टा हो गये थे। वे अपनी अलौकिक प्रतिभा से भविष्य में होने वाली घटनाओं का अनुमान कर सकते थे। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण निम्नलिखित है – श्री महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी ने जब शांतिमत 'असहयोग' प्रचलित किया तो उन्होंने जिस कानून को सबसे पहले तोड़ा वह नमक का कानून था। सरकार ने नमक बनाने का अधिकार अपने हाथ में ले रखा था और सर्वधारण के लिए उसका बनाना वर्जित था। महात्मा जी ने इस कानून के विरुद्ध बिना सरकार की आज्ञा के नमक बनाया। याने कानून को तोड़ दिया १२ मार्च १९३० को।

महर्षि ने सन् १८७५ से पहले ही अर्थात् ५६ साल पहले ही नमक बनाने की बात लिख दी थी और सत्यार्थप्रकाश के पहले संस्करण में प्रकाशित भी हो गया था। और एक अन्याय और अनीति की बात थी – जंगल से सूखी लकड़ी उठाकर घर लाने की आज्ञा नहीं थी।

जब स्वामी जी को सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति दिखाई दी तो उन्हें पता चला कि कई बातें जो उनके सिद्धान्त के विरुद्ध थीं। उन्हें घुसड़ दी गयी थीं। स्वामी जी ने अपने हाथों से संशोधित किया जो दूसरे संस्करण में नहीं आयीं। पर दुख की बात है कि जब दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ तो स्वामी जी देखने वाले नहीं थे, क्योंकि उनका निर्वाण हो चुका था।

बोन मेर आर्यसमाज सौ साल का हुआ

एस. प्रीतम

इतिहास के पाठकों को विदित है कि १५ दिसम्बर १९११ को डॉ० चिरञ्जीव भारद्वाज मॉरीशस आये थे और तीन साल के ठहराव के बाद २२ नवम्बर १९१४ को मॉरीशस छोड़कर चले गए। जबकि बोनमेर आर्यसमाज की स्थापना २९ मई १९१७ में हुई थी। पं० काशीनाथ किस्तो १९१५ में उच्च शिक्षा पाने के पश्चात् देश वापस आये थे। उसी वर्ष भारत में ४१ वर्ष की आयु में डॉ० चिरञ्जीव भारद्वाज का देहावसान हो गया। अनुमान लगाया जा सकता कि स्थापना के समय पं० काशीनाथ तथा पं० गयासिंह आर्य परोपकारिणी सभा की ओर से उपस्थित होंगे। पहले सदस्य बने होंगे रामराज जूती, कालीचरण, नोबोकिस्तो, लालकिसुन लोबीन, कुलदीप, माडब, सनातन लोबीन, रामचरण जूती, तिलक लोचाना, रामगुलाम गुलजय, सामुगम गोविनडेन रामलोलन, रामसुन्दर सुजीन आदि। स्थापना के बाद साप्ताहिक सत्संग और हिन्दी का अध्यापन होने लगा।

अभी प्रतिनिधि सभा और १९१३ से आर्य परोपकारिणी सभा चालू हुई, चार ही साल हुए थे। प्रारम्भिक काल में जो पंडित वहाँ जाते थे उनके नाम इस प्रकार हैं – पं० देवशरण साहज़ादा, पं० जगननन नन्दलाल, पं० बलराम आपाडू, पं० नारायण संजीवी, पं० भोला और पं० वासुदेव दोमा।

रविवार २८ मई को त्रिदिवसीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई और तत्काल बाद शताब्दी समारोह मनाया गया। मुख्य अतिथि कला संस्कृति मंत्री पृथ्वीराजसिंग रूपण थे। आर्यसभा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे – सभा-प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू, सभा-महामंत्री सत्यदेव प्रीतम, सभा-उपप्रधाना श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण, विद्या समिति के प्रधान श्री जीऊत और अन्तरंग सदस्य श्री दोमा। दूर-करीब से आये हुए पुरोहित-परिवार के सदस्य जैसे – पंडित जगनन्दन की पुत्र-वधू, पं० नारायण संजीवी की पोती, पंडित वासुदेव दोमा के सुपुत्र आदि भी उपस्थित थे।।

९२ वर्ष के वयोवृद्ध श्री गोपाल सामी तोषादू रामदू ने अपनी धर्मपत्नी के साथ यज्ञ में भाग लिया, उन्होंने बहुत दिनों तक समाज की हिन्दी स्कूल में हिन्दी पढ़ाई। हर्ष की बात है कि ८६ वर्षीय वर्त्तमान सभा प्रधान श्री देवदत्त जूती ने उनसे हिन्दी सीखी थी।

मनोरञ्जन के लिए पंडित रामदू जी के सुपुत्र और उसकी मण्डली द्वारा तीन भजन गाये गये, जिन्हें सुनकर उपस्थित लोग आत्म-विभोर हो गये ।

डॉ० गंगू जी ने प्रोजेक्टर द्वारा उन पुरोहितों की संक्षिप्त जीवनी प्रदर्शित और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। मंत्री जी ने प्रोग्राम पेश करते हुए बताया कि परिवारों की संतानें आज तक हैं जो समाज को आगे बढ़ाने के लिए अभी तक कटिबद्ध हैं। खुशी की बात तो यह है कि रामदू परिवार की पाँच पीढ़ीयों के लोग उपस्थित थे। कुछ ऐसे लोगों को सम्मानित किया गया जो प्रारम्भकाल में उपस्थित थे। जैसे – लोबिन लालकिसुन, माधन आर्यवीर, रामधनी रामरूप। इसके अतिरिक्त कुछ और लोगों को भी सम्मानित किया गया जैसे – कृष्णावती रामकिसुन, हरिदेव सुदीन, और वर्त्तमान प्रधान देवदत्त जूती।

अन्त में सभा विसर्जन से पहले नामपट्ट का अनावरण कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय रूपण जी के कर-कलमों द्वारा सभा-गण्यमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ। यादगार के रूप में फोटो खिंचे गये, जो सौ साल बाद जब आर्यसमाज की द्विशताब्दी मनायी जाएगी तो बहुत काम की वस्तु होंगे।

सभी लोगों को भोजन से सत्कार किया गया।

नारी उन्नति पथ पर

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, पी.बी.एच, लेखन भूषण

नारी का घर, समाज और देश में महत्वपूर्ण स्थान घर नारी के बिना बस न सकता। इसी लिए तो नारी गृह-लक्ष्मी कहलाती है। नारी बिना घर सूना होता है। वह घर नहीं जिस घर में बच्चों की किलकारी न हो। परिवार की वृद्धि न होती है। स्त्री ही से घर बसता है। स्त्री घर को संवारती है,घरेलू काम-काज अधिकतर नारी ही करती है। उसका काम बड़ा होता है। बच्चों को देखना, पति, सास-ससुर की सेवा, घर और सदस्यों का भार उसी पर पड़ता है। घर में मेहमान आ गए तो उनका भी सत्कार करना पड़ता है। स्त्री बड़ी सहनशीलता के साथ, बड़ी हँसी-खुशी के साथ सब कुछ करती है। नारी कभी-कभी अपमानित होकर भी अपने नारी धर्म को निभाती है। आदर्श-नारी के बदौलत ही घर में सुख और शान्ति रहती है। जिस घर में नारी का अपमान होता है वह घर नरक समान होता है।

भारत में अनेक नारियाँ हुई हैं, जिन्होंने आदर्श नारी के रूप में उत्तम-उत्तम शिक्षाएँ दी हैं। सीता, अन्सूया, मदालसा, अहिल्या, गार्गी, कुन्ती कितनी श्रेष्ठ नारियाँ थीं। यदि आज की नारियाँ उनकी शिक्षाओं को अपनाएँगी और उनके बताये मार्ग पर चलेंगी तो धरती स्वर्ग बन जाये।

स्त्रियाँ आज पढ़-लिखकर विदुषी बन रही है। समाज में आज उनका ऊँचा स्थान है। घर की चार दीवारी से बाहर आकर तन, मन और धन से समाज सेवा में लगी हुई है। शहर-शहर, गाँव-गाँव में महिला समाज स्थापित स्त्रियों-पुरुषों की तरह सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करती है। नारी उत्थान, युवतियों में नव-चेतना आदर्शमय जीवन बिताने, अच्छी गृहणी बनने की बातें बताती हैं। नारियाँ खुद यज्ञ-हवन करती हैं, सत्संग में भाग लेती हैं, उत्तम-उत्तम भाषण, उपदेश देती हैं। नारियाँ लेखिकाएँ, कवयित्रियाँ भी हैं। हिन्दू धर्म, संस्कृति, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, भेष-भूषा को बचाये रखने में नारियों का महा पूर्ण योगदान है। पूजा-पाठ, संध्या-हवन नारियाँ बड़ी श्रद्धा-भक्ति से करती हैं, वे अपने पति, बच्चों तथा परिवार के सुख के लिए व्रत भी रखती हैं।

आज की महिलाएँ राजनीति में भी सक्रिय भाग ले रही हैं। कितने देशों में महिला-प्रधान-मंत्री हैं। वे बड़ी कुशलता से देश की शासन-बागडोर को सम्भाल रही हैं। देश की उन्नति में वे निछावर हैं। कितनी वीरांगनाएँ भी हुई हैं, जैसे झांसी की रानी, महारानी लक्ष्मीबाई जिन्होंने वीर पुरुष की तरह अंग्रेज़ों से भारत देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध किया था, वैसी महिलाओं पर दुनिया को गर्व होता है।

आज हमारे लिए गर्व की बात है कि मॉरीशस में नारियाँ भी देश की बागडोर को सम्भालने तथा देश को उन्नतिशील बनाने के लिए उच्चपदाधिकारिणी के रूप में कार्यरत हैं, जैसे कि श्रीमती अमिना-गरीब-फाकिम मॉरीशस देश की राष्ट्रपति पद पर आसीन हैं, तो श्रीमती माया हनुमानजी राष्ट्रसभा में स्पीकिरिन हैं, श्रीमती लीला देवी लछुमन शिक्षा मंत्रिणी है और श्रीमती फाजिला दौरियाऊ भी मंत्रिणी पद पर परिवार और समाज की उन्नति में कार्यरत हैं।

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती

श्रीमती भगवन्ती घूरा

सत्यार्थप्रकाश जयन्ती मनाना सराहनीय अवसर है जब कि हमें पुनः उस महान् अमर ग्रन्थ का अवलोकन करने का मौका प्राप्त होता है, अनमोल विचारों से पुनः जागृत होते हैं।

मिला है यह जीवन दोबारा क्यों न करें उपकार ?
अच्छे कर्म से बसावें सुखी संसार ।
अच्छे कर्म का बीज है उत्तम विचार ।
शुद्ध-विचार है सफल जीवन का आधार ।
आधारशील जीवन है महान् आत्मा का सार ।

महर्षि देव दयानन्द है अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का रचनाकर पढ़ें और पढ़ावें और बनावें आर्य परिवार।

महाभारत के युद्ध के बाद वेद-विद्या लुप्त हो गया था। देव दयानन्द ने वेद का पुनरुत्थान किया और आर्य जाति के कल्याण के लिए वे आर्यत्व को स्थापित करने में जूट गये। प्रचार-कार्य करते रहे और स्थायी रूप देने के वासते पुस्तकों की रचना भी की।

आज आर्य जगत् प्रकाशमान है पूरे विश्व में जब कि उनकी महान् रचना सत्यार्थप्रकाश अनेक भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रकाशित है। वेदों का निचोड़ इस अमूल्य ग्रन्थ के चौदह सम्मुलासों में जड़ दिये हैं। एक ईश्वर के दृढ़ विश्वास होकर कैसे आगे बढ़ना चाहिए हमें दर्शाए हैं। जीवन पर्यन्त के शंका-समाधान और उलझनों का सुलझाना सत्यता से आगे बढ़ने की शिक्षा दिये हैं। मानव-मात्र के लिए एक उपयोगी मार्ग दर्शक ग्रन्थ है।

सौभाग्य से हमारे देश में हमारे भारतीय पूर्वजों के लाये हुए यह पुस्तक की एक प्रति चिंगारी की तरह चमकाकर और सौ साल होते-होते पूरे देश में अनगिनत प्रतियाँ प्राप्त हैं। इसी पुस्तक के आधार से यहाँ का आर्यसमाज का निर्माण हुआ है और आर्यत्व से जीवन प्रकाशमान है।

इस पुस्तक की हिफ़ाजत करना, प्रसारण करना हमारा कर्तव्य है और इस धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना है। मानव ईश्वर के सर्वोत्तम रचना है और जगत् गुरु देव दयानन्द के सर्वोतम रचना सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ है। ऋषि ऋण से तर जाने का एक उत्तम मार्ग है। स्वामी जी के इस ज्ञान को अपनावें प्रतिदिन सूर्य की ज्योति से संसार प्रकाशमान होता है, हम मानव ज्ञान की ज्योति से उज्ज्वल होवें और दूसरों को भी प्रकाशमान होने की प्रेरणा देवें।

'सत्यमेव जयते'

सत्यार्थ प्रकाश के अनमोल वचन

"आर्यों का वेद ही मानना"

वेद अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यथावत करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए वेद हमको मान्य हैं इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एकमत्य होकर रहना चाहिए। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

बोन मेर आर्यसमाज की शती-समारोह

प्रभाकर जीऊत, पी.एम.एस.एम.,आर्य भूषण

किसी आर्यसमाज का सौ साल होना अपने-आप में एक महत्वपूर्ण बात है। गत २८ मई बोन मेर आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन था। जहाँ पर कुछ लोग मातृ-दिवस मना रहे थे। वहीं पर आर्यसमाज अपनी शताब्दी भव्य-रूप से मना रहा था। उस अवसर पर समाज ने तीन दिवसीय महायज्ञ का आयोजन किया था, अर्थात् २६, २७, २८ मई को। २६ का कार्यक्रम ३.३० बजे यज्ञ से आरम्भ हुआ। यज्ञ के बाद संगीत मंडली द्वारा भजन का कार्यक्रम भी हुआ। तत्पश्चात् आर्यसभा के उपप्रधान श्री हरिदेव रामधनी जी द्वारा एक लघु-सन्देश प्रस्तुत हुआ। उपप्रधान जी ने लोगों को सौ साल पूर्व की स्थिति कैसी होगी – इसका संकेत किया कि लोगों ने कितने तूफ़ानों से लड़े होंगे। उस समय चारों तरफ़ जंगल होगा। सभी गरीब होंगे, फिर भी उन्होंने अपने धर्म और संस्कृति को बचाए रखा। उन्होंने आर्यसभा की ओर से सभी कर्मठ सदस्यों को बधाई दी और धन्यवाद दिया। उस दिन मुख्य वक्ता आचार्य राजमन रामसाहा जी थे। पंडित जी ने अपने भाषण के दौरान संकेत किया कि आर्यसमाज की स्थापना में डा० चिरंजीव भरद्वाज जी का भारी योगदान रहा। उन्होंने बताया कि कितनी कठिनाई से उन्होंने लगभग ४० तक आर्यसमाज की स्थापना की थी। वे १९११ में आए और १९१५ में चले गये। दो साल बाद बोन मेर आर्यसमाज की अतः १९१७ में २९ मई को स्थापना हुई । रविवार होने के कारण २८ मई को शताब्दी मनाई गई। उस दिन के कार्य का संचालन आर्यसभा के उपमंत्री श्री प्रभाकर जीऊत जी द्वारा हुआ। अन्त में सभी का भोजन से सत्कार किया गया, जो बोन मेर आर्यसमाज द्वारा तैयार किया गया था। तारीख २७ को भी कार्यक्रम बराबर रहा। उस दिन के मुख्य वक्ता आर्यसभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर जी थे। उन्होंने अपने भाषण का आरंभ आचार्य राजमन रामसाहा के एक लेख से किया, जिसमें आचार्य जी लिखते हैं कि बोनमेर गाँव का नाम भारत के सुमात्रा गाँव से मेल रखता है। उन्होंने यह भी संकेत किया कि आज युवक और युवतियों का ज़माना है। अतः अब समाज की बागडोर उन्हीं लोगों के हाथों में छोड़नी चाहिए। अन्त में पंडित रामखेलावन जी का एक लघु भाषण हुआ। पंडित जी ने तीन अनादि पर बात की। अतः ईश्वर, जीव और प्रकृति। इसी विषय पर उनका भजन भी हुआ। कार्य का संचालन फ़्लाक आर्य ज़िला परिषद् की मंत्रिणी श्रीमती विद्यावती कासिया जी द्वारा हुआ। उस दिन का भोजन गाँव के कोविल द्वारा तैयार किया गया था। मुख्य कार्यक्रम तो रविवार २८ मई को था। सवेरे ९.०० से १०.०० बजे तक यज्ञ तथा प्रार्थना-भजन का कार्यक्रम हुआ।

इस दिन का मुख्य वक्ता आर्यसभा के प्रधान डॉ० उदयनारायण गंगू जी थे। उन्होंने अपना संदेश New Technology Projection के द्वारा किया, जो एकदम सराहनीय रहा। विशेषकर वे पंडितगण जिन्होंने कई तूफ़ानों से लड़कर आर्यसमाज को जीवित रखा, जिनमें मुख्यतः पंडित दोमा, पंडित सयजादा, पंडित भोला, पंडित रामदू जी थे। अन्त में मंत्री माननीय पृथ्वीराजसिंग रूपन जी का लघु-भाषण बोन मेर आर्यसमाज के इतिहास से संबंधित था। उन्होंने बताया कि किस तरह से बोनमेर आर्यसमाज का नम्बर तीन बार बदला गया ।

सभी महानुभाव श्रद्धेय श्री देवदत्त जूथी जी की सराहना करते हुए थकते नहीं थे। बोन मेर आर्यसमाज के कर्णधारों में से वे अकेले जीवित हैं, जो ८६ वर्ष के हैं। अन्त में हम सभी कार्यकर्त्ताओं को इस भव्य आयोजन के लिए धन्यवाद समर्पित करते हैं।

इतिहास .....

पं० सहदेव पं० नेहरू से मिले

मॉरिशस के समस्त मज़दूर तथा छोटे किसान भाइयों को ज्ञात हो कि कलकत्ते में पैर रखते ही पुलिस इन्स्पेक्टर ने मुझे गिरफ़्तार कर लिया था। मुझसे इनक्वाईरी लेकर ६-७ घंटे बाद छोड़ दिया। मेरे पीछे सी०आई०डी० लगा दी। यह सब कार्यवाही किसकी होगी इसे आप जानकार हैं। दो दिन बाद मैं इलाहाबाद पं० जवाहरलाल नेहरु जी से भेंट की। अपने गृह पर पंडित जी ने मेरा प्रेमपूर्वक मान आदर किया। आप ग़रीबों का विवरण मैंने सुनाया। पूज्य पंडित जी ने आश्वासन दिया कि वे ज़रूर इस पर विशेष ध्यान देंगे। मेरे रहने का प्रबन्ध वहीं पर अपने योग्य सेक्रेटेरी के गृह पर कर दिया। अत्यन्त शोक है कि पंडित जी की राजमाता का देहान्त १०.१०१९३८ को हो गया और मौसी का ११.१.३८ को हुआ। मॉरिशस वासियों की राजमाता शोक दिवस मनाना चाहिए क्योंकि भारतभर में हरताल और शोक दिवस मनाया जा रहा है ।

आर्य वीर १८ जनवरी १९३८
प्रेषक - प्रहलाद रामशरण

आर्य सभा मॉरीशस

स्थिर-निधि

हमें बताते हुए खुशी हो रही है कि बहुत से दानी लोगों ने सब मिलाकर १५० निधियाँ स्थापित की हैं, जिनकी सर्वजोड़ राशियाँ छः मिलियन से अधिक रुपये की हैं, जिनके सूद के पैसे से निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति की जाती है। जब निधि स्थापित करने के लिए पैसे देते हैं तो खुद अपनी ओर से शर्तें रखते हैं, जिनको बदलना असम्भव होता है। स्वयं राशि दाता भी उन पूर्व निर्धारित शर्तों को बदल नहीं सकते।

हम विनम्र निवेदन करते हैं कि आप भी अपने नाम पर एक निधि स्थापित करें कम-से-कम रु० १०,००० की। यदि आपके परिवार के किसी सदस्य ने रु० १०,००० से कम की निधि स्थापित की होगी तो उसे रु० १०,००० तक कीजिए या उसमें अतिरिक्त राशि जोड़िए ।

अधिक जानकारी के लिए आर्यसभा के पूर्व कोषाध्यक्ष या निधि समिति के प्रधान राजेन्द्र रामजी के मोबाईल फ़ोन (57969526) पर सम्बन्ध स्थापित करें या आर्य सभा मॉरीशस के महामंत्री से पूछ-ताछ करें। (फोन न० 52573817)

अग्रिम धन्यवाद
भवदीय
एस. प्रीतम, जनरल महासचिव

Dear Brothers & Sisters

STHIR NIDHI

We wish to inform you that several members and well-wishers have established some 150 Sthir Nidhis. We are currently updating our data on these donors with a view to publish a booklet for information purposes.

We seize of this opportunity to make a humble appeal to you to consider setting up a Sthir Nidhi in your name or that of any of your close relative for a minimum amount of Rs10,000. You may kindly send your donations by cheque in the name of "Arya Sabha Mauritius" and send a short profile of the person in whose name the said amount would be held as nidhi (trust fund) by the Sabha.

Mr. Rajendra Prasad Ramjee, Asst. Treasurer of the Sabha and President of the Sthir Nidhi Committee (mobile No. 5796 9526) would be pleased to answer to your queries.

Thanking you.

Yours sincerely
S. Peerthum, *Secretary*

02 May 2017

OM
SAVANNE ARYA ZILA PARISHAD
SATYARTHA PRAKASH JAYANTI
PROGRAMME

1. Thurs. 08/06 4.30 p.m. Chemin Grenier A.S.
2. Fri. 09/06 5.00 p.m. Chateau Benares A.S.
3. Sat. 10/06 9.00 a.m. Souillac Gurukul
4. Sun. 11/06 9.00 a.m. Chemin Grenier A.M.S.
5. " " 9.00 a.m. St. Amma Arya Samaj
6. " " 9.00 a.m. Belle Vue Arya Samaj
7. Mon. 12/06 9.00 a.m. Foolbasseea Sewa Ashram
8. Tues. 13/06 4.30 p.m. St. Aubin Arya Samaj
9. Wed. 14/06 9.00 a.m. Souillac Senior Citizens
10. Thurs. 15/06 2.00 p.m. Comlone Arya Samaj
11. " " 2.30 p.m. Batimarais Arya Samaj
12. Fri. 16/06 4.00 p.m. Camp Siazi A.S.
13. Sat. 17/06 9.00 a.m. Souillac Gurukul
14. Sun. 18/06 6.00 a.m. Chamouny A.S
15. " " 8.00 a.m. Bois Cheri A.S.
16. " " 9.30 a.m. Souillac A.S.
17. Mon. 19/06 9.00 a.m. Souillac gurukul
18. Tues 20/06 4.30 p.m. St. Aubin A.S
19. Wed. 21/06 9.00 a.m. Souillac Senior Citizens
20. Thurs 22/06 4.30 p.m. Chemin Grenier A.S.
21. Fri. 23/06 4.00 p.m. Riv. des Galets A.S
22. " " 3.30 p.m. Riv. du Poste A.S.
23. Sat. 24/06 9.00 a.m. La Flora A.S
24. " " 3.30 p.m. Riv. du PosteA.S.
25. Sun. 25/06 8.00 a.m. Chamouny A.S
26. " " 9.00 a.m. Britannia A.S.
27. " " 9.00 a.m. Prud'homme A.S.
28. " " 9.00 .a.m. Riv. du Poste A.S.
29. " " 10.00 a.m. Arya Mahila Mandal Ashram
30. Tues. 27/06 4.30 p.m. St. Aubin A.S.
31. " " 7.30 p.m. Riv. du Poste A.S.
32. Wed. 28/06 9.00 a.m. Souillac Senior Citizens
33. Thurs. 29/06 4.00 p.m. Surinam A.S.
34. " " 5.00 p.m. Grand bois A.S.
35. Fri. 30/06 4.00 p.m. Bois Cheri A.S.
36. Fri. 30/06 4.00 p.m. Chateau Benares A.S.

Yajna and Sandesh will be performed by Savanne Priests
Bhajan will be presented by Savanne Arya Sangeet Samiti

R.P. Ramjee *President* B. Boolaky *Secretary* B. Bhowon *Treasurer*

OM
SATYARTH PRAKASH JAYANTI
PAMPLEMOUSSES ARYA ZILA PARISHAD
cont. from last issue

Programme

Bois Mangues A.S. Fri. 16/06 4.00 p.m
Fond du Sac A.S No. 8, 154, 102 Fri. 16/06 3.30 p.m
Trois Boutiques A. Mandir - Triolet Sun. 18/06 8.30 a.m
Ilot A.S. Wed. 21/06 4.00 p.m
Maheshwar Nagri A.S. Wed. 21.06 12.30
Mount A.S. Fri. 23/06 6.00 p.m
Bois Rouge A.S. Sat. 24/06 3.00 p.m
Fond du Sac A.S. No. 8, 154, 102 Sun. 25/06 9.00 a.m
Creve Cœur A.S Sun. 25/06 3.00 p.m
Trois Boutiques A.M. - Triolet Sun. 25/06 8.30 a.m
Notre Dame Ducray Shradhanand A.S. Fri. 30/06 6.00 p.m

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू, *पी.एच.डी., ओ.एस.के., जी.ओ.एस.के., आर्य रत्न*
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम, *बी.ए., ओ.एस.के, सी.एस.के., आर्य रत्न*
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम,आर्य भूषण*
(४) प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर, *डी.एस.सी, जी.ओ.एस.के., आर्य भूषण*
(५) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.

The Birth of Satyarth Prakash

Prof. Soodursun Jugessur, D.Sc, G.O.S.K, Arya Bhushan

As we celebrate the month of Satyarth Prakash, it is good to know the background of the appearance of the very first edition of this book that has transformed the lives of millions of people in the world. It is recognized, after its new editions appeared, as the masterpiece of Swami Dayanand Saraswati, the Founder of the Arya Samaj. Various people have written commentaries on its contents and translated the book into twenty-three different languages!

Swami Dayanand Saraswati (Born 12 Feb. 1824, and Died 30 Oct 1883) , aged 59, is recognized as a Rishi or seer who had delved into the ocean of Vedic philosophy, mastered the classical Sanskrit in which the Vedas were chanted and later written, and brought out the essence of the four books into the contents of the Satyarth Prakash.

The first edition of Satyarth Prakash appeared in 1875. This was after a suggestion of Raja Jaikishan of Benaras, a staunch follower of the swami, who requested him to put his teachings in book form so that it could reach a wider section of the people. Swamiji used to give his discourses in simple Sanskrit as he was a not proficient in Hindi. So he requested one Pandit Chandrasekhar to translate his verbal dictations and write them in Hindi. After an intense period of dictation during only two weeks, the book was completed and sent for printing. Swamiji had no time to revise the edition and left for Allahabad where he was called to preach. The printed book was edited by the translator himself who, unfortunately, had not fully grasped the views of Swamiji and inserted his own interpretations. As such many discrepancies had appeared in the first edition of the book that appeared in 1875.

Mistakes were discovered in 1877 when Swamiji was lecturing on Shraddha and Tarpana, and condemned such practice. He said that real shraddha and tarpana had to be done when the parents were alive, as a mark of love and respect for them, and not after their demise when the soul had already left the body. The Vedas did not sanction such practice that was later introduced in the Hindu society by orthodoxy as a means of their livelihood. One orthodox pundit who did not like this criticism, brought out that in the book Satyarth Prakash of 1875, Swamiji had not condemned the same and accepted it! This shocked Swamiji who, on verification, found that the pundit was right. Immediately he ordered that the first edition be removed from the market.

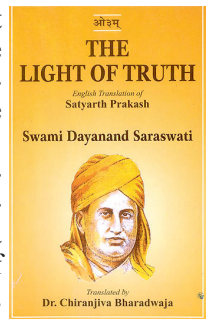

Swamiji had relied on Pundit Chandrasekhar fully for a genuine translation of his Sanskrit dictation, but was mistaken. Relying on others, twice Swamiji had been misled: 1. Book Satyarth Prakash first edition and 2. The letters sent to the founders of the Theosophical Society. The Foreigners Colonel Olkott and Madam Blacatsky had expressed their desire to Swamiji to have their Theosophical Society renamed as the Theosophical Society of the Arya Samaj. Swamiji had accepted, but when the foreigners came to India, Swamiji who had initially agreed to the suggestion, found that the preachings of the Society were not in line with the Vedas. Swamiji had relied on the pundit to correspond with them. Again Swamiji's views were not properly reflected in the letters. These forced Swamiji to master Hindi and revise the original Satyarth Prakash thoroughly before a second edition could come out five years later. A revised edition of the book came out in 1882, after Swamiji had himself gone through the scripts, just one year before his death in 1883.

In the first twelve chapters, Swamiji elaborated on the various names of God, spoke on the upbringing and education of children, family life and the conduct of parents, the stages in man's life, the duties of the state, God and the Vedas, creation, bondage and emancipation, and the way of proper living in line with dharma. Then in the last four chapters, Swamiji analyzed the religious cults of India, the atheist cults, and finally the Christian and Moslem religions. In the end he devoted a section on his beliefs and disbeliefs.

The main philosophical doctrine of Swamiji, based on the Vedas, is Traitavaad, as opposed to Advaita which he had rejected. He based his views completely on the Vedas and Arsha literature. Having himself been a follower of Advaitavad in his early years, he had found its weaknesses that were corrupting the society. He tried to bring back the glory of the Vedic period and revitalize the society.

Satyārtha Prakāsh :

Mieux comprendre les préceptes

Le Satyārtha Prakāsh est le chef d'œuvre des écrits de Maharishi Svāmi Dayānand Sarasvati. Ce grand sage créa l'Arya Samaj, une institution exemplaire à promouvoir la culture Védique d'antan. Il insista que ce mouvement n'est pas une nouvelle secte religieuse.

Ce chef d'œuvre ne doit pas être confiné entre les quatre murs de l'Arya Samaj, dans une bibliothèque, une armoire, un classeur ou une étagère. Le Satyārtha Prakāsh n'appartient pas qu'aux membres de l'Arya Samaj …c'est l'héritage spirituel légué par l'auteur à l'humanité. Ce condensé la culture Védique sert à embellir notre personnalité … que nous les traduisons et transcrivons, d'une façon indélébile, dans notre vie.

Plusieurs qui ont lu ce livre remettent en cause la complexité à comprendre et à appliquer les enseignements dans la vie au quotidien …une allégation qui est à l'opposé de l'affirmation de Pandit Guruduth Vidyārthi : *« j'ai appris de nouvelles choses à chaque fois que j'ai lu le Satyārtha Prakāsh !!»*

Le pourquoi de cette allégation de complexité à comprendre

Nous oublions simplement de commencer par le commencement …à commencer par comprendre la préface et ensuite se mêler du reste.

La préface est un texte en tête de l'ouvrage pour le présenter et le recommander au lecteur, en préciser éventuellement les intentions ou développer des idées plus générales ; un texte d'introduction ou d'entrée en matière.

La recette qui permette une meilleure compréhension

Dans la préface du Satyārtha Prakāsh, l'auteur nous donne la recette qui permette une meilleure compréhension du sens de cet ouvrage :

(1.1)**Ākānkshā** (आकांक्षा) : entrer dans l'esprit de l'auteur, saisir dans la forme ou les grandes lignes ce que l'auteur nous présente.
Exemple : micro dans la sonorisation est un récepteur du son ; micro dans l'étude des particules signifie minuscule ; micro en matière de l'économie désigne la gestion du budget d'une personne, d'une famille, d'une association, d'un village, ville ou district.

(1.2) **Yogyatā** (योग्यता) : la forme, la pertinence, la compatibilité des idées ou la logique dans la connexion des mots.
Exemple : l'irrigation et l'eau sont mutuellement connecté.

(1.3) **Āsatti** (आसत्ति) : regarder les mots dans leurs séquences et me pas les déplacer hors de contexte.
Exemple : retenez, pas lâcher et retenez pas, lâcher ou la ponctuation (la position du virgule détourne le contexte et l'ordre original.

(1.4) **Tātparya** (तात्पर्य) : à donner le vrai sens des mots tels selon les intentions de l'auteur
Exemple : nava kambala qui signifie (i) une couverture neuve, et (ii) neuf couvertures. Tout comme la distribution de couvertures neuves aux personnes âgées où on donne à chacun nava kambala, c'est-à-dire …une couverture neuve non pas neuf couvertures.
Agir autrement ne nous permettra pas de saisir l'essence des enseignements du Satyārtha Prakāsh.

Une autre recette pour une meilleure compréhension

Le chapitre 9 contient la deuxième recette pour une meilleure compréhension du sens de cet ouvrage :

(2.1) **Shravana** (श्रवण) : l'acquisition des connaissances par les sens de perception principalement l'écoute ou l'ouïe, de surcroit la spiritualité qui est très abstrait, la plus subtile de toutes les sciences.
Exemple : Lors des conférences sur le développement de la personne (personality development) ou service clientèle (customer service) nous entendons souvent le mot listening skills ou l'art de l'écoute. L'emphase est sur l'écoute impliquant une vive attention.

Contrairement à l'opinion courante l'écoute n'est pas un concept des années 1980 …mais un qui découle des Védas. L'écoute de la voix intérieure (le guide suprême) transformait les hommes en êtres humains …et ultérieurement en Yogis !

(2.2) **Manana** (मनन) : la contemplation où on considère le sujet ou une situation, un état dans tous ses aspects, dans toute l'étendue, en prendre pleinement conscience ; tâche qui facilite la mémorisation dans les études et autres temps.
Exemple : Un artiste regarde longuement quelque chose, quelqu'un avec beaucoup d'attention, en s'absorbant dans cette observation avant de réalise son tableau. Même un dessin abstrait demeure le produit fini d'intense réflexion.

Généralement au cours de l'apprentissage la contemplation se fait en solo après les cours. En tant que jijnaasu, les questions ont pour but d'approfondir ses connaissances, non pas pour mettre à l'épreuve ou défier celui qui nous partage les connaissances.

(2.3) **Nididhyāsana** (निदिध्यासन) : C'est l'étape supérieure où on se pose des questions … pour et contre …et à l'aide du Yoga (la tranquillisation de notre esprit et des émotions) tirer au clair notre raisonnement …si on est sur la bonne voie ou pas.
Exemple : Au cours des débats on pèse les arguments pour et ceux contre pour arriver à des justes conclusions. On y trouve un exercice semblable à l'entrainement sportif ou le jeu d'échec où les joueurs anticipent les actions de la partie adverse et planifient leurs coups.

(2.4) **Sākshātkāra** (साक्षात्कार) : La réalisation des connaissances correctes …la nature, les caractéristiques, l'utilisation du sujet.

Les Yogis, dans l'ultime phase de samādhi parviennent à la réalisation des trois composantes de la trinité …Prakriti (les éléments ou matières premières de la nature, sattva, rajas & tamas), Jeeva (l'âme) et Ishvara (Dieu).

Ces recettes sont éternelles !!

Elles furent leurs preuves au début de l'existence de l'homme, sont valables de nos jours et le seront toujours. Elles s'appliquent dans toutes les disciplines – les études, le sport, le travail, la préparation des repas.

A chacun de mettre la main à la pâte. Le succès est assuré au bout d'une pratique dans la durée (pendant longtemps) et régulière, assaisonnée d'une bonne dose d'amour et d'enthousiasme.

A quoi sert l'étude du Satyaartha Prakaash selon les recommandations de l'auteur ?

☞ Les préceptes de ce chef-d'œuvre découlent des Védas et autres Arsha Granthas. Les Védas constituent la seule et unique révélation, un réservoir de connaissances transmis par Dieu à l'homme à la création. Les Arsha Granthas, écrits par d'autres rishis (sages), simplifient les enseignements et nous aident à mieux comprendre la culture Védique.

☞ Une meilleure compréhension de ces préceptes nous incitera à vivre la spiritualité comme une réalité spirituelle à tout temps (24x7 : 24 heures sur 24 et 7 jours sur 7).

☞ L'hygiène de vie sera réellement spirituelle. La spiritualité ne sera plus comme un manteau qu'on sert quand il nous convient et on délaisse quand cela ne nous convient pas!

☞ La spiritualité nous collera comme notre peau ! La délaisser nous fera du mal ! La cultiver nous rendra heureux !

Yogi Bramdeo Mokoonlall

cont. from last issue

SATYARTHA PRAKASH of Swami Dayanand Saraswati ji

Mrs Rutnabhooshita Puchooa, M.A., P.G.C.E, Arya Bhooshan

Chapter 4 – Family Life

This chapter deals with marriage – the types of marriages, what qualities must be looked for in the bride and bridegroom, what types of families are to be avoided for marriage. Then comes a description of the five Mahayajnas in married life. This chapter also elaborates on the duties of each varna (class) of society, the duties of the husband and the wife and the qualities of each.

Chapter 5 – Reclusion Renunciation

In this chapter, there is a description of the procedure of Vānprastha (Reclusion) and Sanyāsa (Renunciation) with elaboration of the duties of the person in each of these two stages of life.

Chapter 6 - The Duties of the State

Here there is discussion on what type of government we should have, how it should originate and how it should be most successful. The governor and the governed should co-operate in fostering prosperity and enlightenment by establishing three bodies – Board of education, Board of religion and Board of politics, and by providing men with an all-round education, liberty, piety and training. There is a description of the type of people who should be elected for governing the country.

Chapter 7 – God and the Vedas

Here there is a detailed description of God and the divine Vedas, of Prārthnā (Prayer), Upāsnā (communion worship), Patanjali's Yoga sutras and other systems of Philosophy, Bhagavad Gita and other religious books.

Chapter 8 – Creation

This chapter explains creation of the universe and the nature of God.

Chapter 9 - Bondage and Emancipation

This chapter deals with knowledge, ignorance, bondage and emancipation. Swamiji gives an elaborate explanation of each of these.

Chapter 10 - Way of Living

Swamiji here describes the right way of living, wrong way of living as well as propriety and impropriety of different types of food – for a healthy, long life.

Chapter 11

Swamiji gives a critical description of the religious cults of India, examining the merits and demerits of these cults.

Chapter 12

Here, Swami Dayanand writes about the atheistic cults of India and expounds the merits and demerits of Cāravākas, the Buddhists and Jainas.

Chapter 13 – The Christian Religion

In this chapter, Swami Dayanand gives his views and criticisms on Christianity.

Chapter 14 – The Moslem Religion

This chapter contains Swamiji's views and criticisms on Islam.

Note : *"Satyarth Prakash" has been translated in over 25 languages, in both Indian and European languages, and is available for purchase in Hindi, English, French, Tamil, Telegu, and Marathi versions at the Marketing (Sale) Section of Dhruvanand Library at Arya Bhavan, Arya Sabha Mauritius, 1, Maharshi Dayanand Street, Port-Louis .*

Moreover, at Koolwantee Jhummun Lending Library / Archives of Arya Sabha located at Rishi Dayanand Institute (former DAV Degree College) at M1, Pailles, copies of Satyarth Prakash are available in these languages for reference work.

Interested readers can avail themselves of these facilities provided by the Arya Sabha Mauritius.